विद्यार्थी-अधिगम के सुदृढ़ीकरण के लिए कारगर आकलन

आँचल चोमल

अध्यापन, शिक्षा के हर सोपान पर, अत्यन्त सोद्देश्य और सुविचारित गतिविधि है। अपने अध्यापन को उद्देश्यपूर्ण बनाने के लिए शिक्षक तरह-तरह की युक्तियाँ अपनाते हैं। इनमें से एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण युक्ति है अध्यापन के दौरान आकलन के विभिन्न क़िस्म के औपचारिक और अनौपचारिक तरीक़ों का समावेश, ताकि यह पता लगाया जा सके कि विद्यार्थी उनका अनुसरण कर सकते हैं या नहीं और विद्यार्थी अगर नहीं सीख पा रहे हैं तो फिर उन्हें (शिक्षकों को) कौन-सा भिन्न तरीक़ा अपनाना चाहिए। अध्यापन और सीखने की प्रक्रिया के दौरान आकलन के इस क़िस्म के समावेश को नेशनल एजुकेशन पॉलिसी (एनईपी) 2020 और नेशनल करिकुलॅम फ्रेमवर्क (एनसीएफ़) 2023 में आकलन का केन्द्र-बिन्दु कहा गया है। एनसीएफ़-एसई में इस्तेमाल किया गया एक वाक्यांश यह है : “आकलन रचनात्मक, विकासपरक और अधिगम-केन्द्रित होना चाहिए।”

यह लेख इन धारणाओं – रचनात्मक, विकासपरक और अधिगम-केन्द्रित – के अर्थ को आकलन और इस बात के परिप्रेक्ष्य में खोलने की कोशिश करेगा कि विद्यार्थी की अधिगम की प्रक्रिया को दृढ़ता प्रदान करने में इन विचारों का उपयोग किस तरह किया जा सकता है।

रूपरेखा

आकलन को अक्सर तरह-तरह के नकारात्मक अर्थों से जोड़कर देखा जाता रहा है, जैसे कि तनाव, भय और उद्विग्नता। लेकिन, पिछले कुछ दशकों के दौरान, अनुसन्धान ने इस बात का विश्वसनीय साक्ष्य प्रस्तुत किया है कि जब शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया के दौरान आकलन का सार्थक ढंग से इस्तेमाल किया जाता है, तो यह विद्यार्थी की अधिगम-प्रक्रिया के परिष्कार के साथ-साथ अध्यापन में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। हम इसे सामान्यतः विकासपरक आकलन या अधिगम के लिए आकलन कहते हैं। एनसीएफ़-एसई 2023 में यह सुझाव निहित है कि आकलन को उस निरन्तर प्रक्रिया के रूप में देखा जाना चाहिए जिसे शिक्षक, औपचारिक-अनौपचारिक तरीक़ों का इस्तेमाल करते हुए, अध्यापन-अधिगम की प्रक्रिया में समाविष्ट करते हैं, ताकि वे विद्यार्थी-अधिगम के बारे में विश्वसनीय साक्ष्य हासिल कर सकें। इस तरह का साक्ष्य एकत्र करने से शिक्षकों को अपनी अध्यापन-शैली की कारगरता को इन मायनों में समझने में मदद मिलती है कि विद्यार्थी क्या समझे हैं, आगे क्या करने की ज़रूरत है, अध्यापन की कौन-सी पद्धतियाँ कारगर हैं, किस तरह के संसाधनों से मदद मिलती है आदि।

इस तरह के परिप्रेक्ष्य में इस बात पर विचार करना महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि विद्यार्थी-अधिगम का विश्वसनीय साक्ष्य क्या है और शिक्षक इस तरह के साक्ष्य को कैसे जुटा सकते हैं। उतना ही महत्त्वपूर्ण है इस बात पर चर्चा करना कि वे विद्यार्थी-अधिगम को सुदृढ़ करने के लिए ऐसे साक्ष्य का उपयोग किस तरह करते हैं।

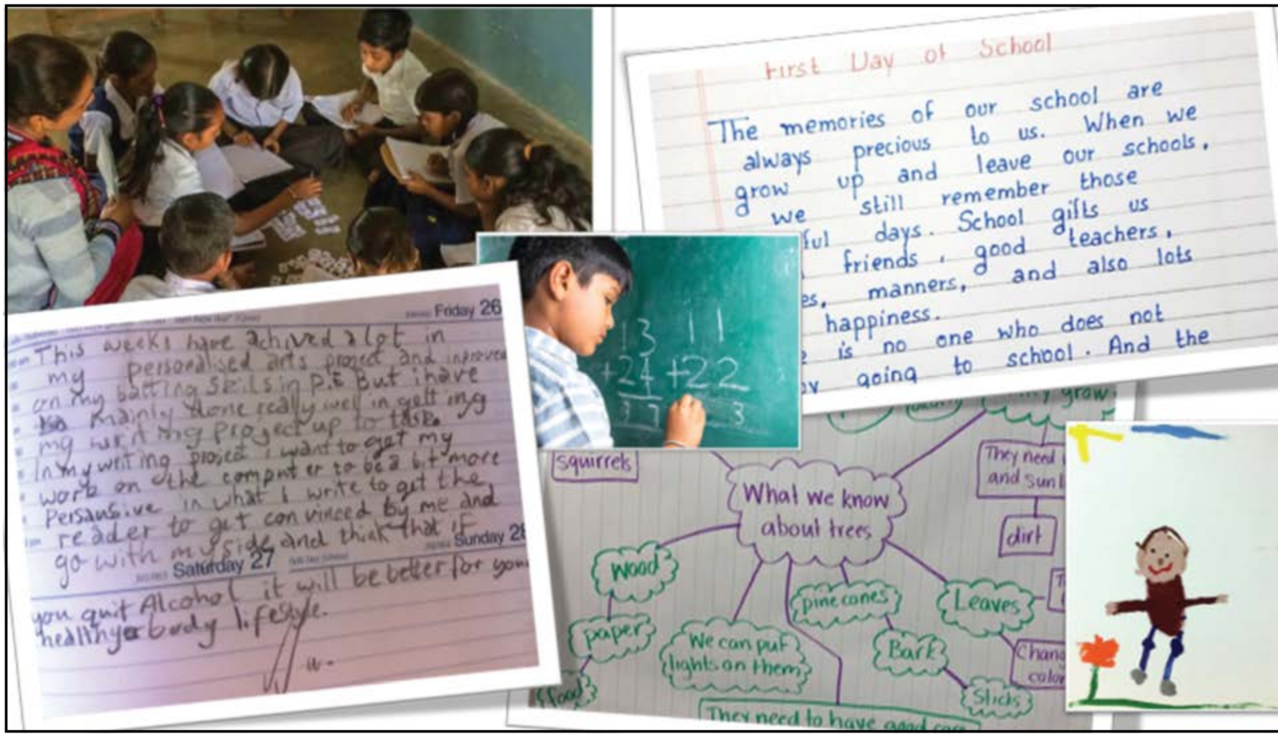
हम यह किस तरह जानते हैं कि विद्यार्थी सीख रहे हैं?

स्कूल में, ऐसे अनेक तरीक़े होते हैं जिनमें विद्यार्थी अपने ज्ञान, क्षमताओं, मूल्यों और रुझानों का परिचय देते हैं। ये स्पष्ट (और कभी-कभी अस्पष्ट) ‘संकेत’ साक्ष्य का काम करते हैं। ये किसी रचना की शक्ल में हो सकते हैं, जैसे कि विद्यार्थियों द्वारा स्वतंत्र रूप से या आपस में मिलकर तैयार की गई वर्कशीट या ड्राइंग; क्लासवर्क या होमवर्क के दौरान नोटबुक में किया गया काम, प्रोजेक्ट या सर्वेक्षण की रिपोर्टें, परीक्षा की कॉपियाँ; या फिर ये कक्षा में सामूहिक रूप से किए गए काम में, स्कूली गतिविधियों आदि में भाग लेने वाले बच्चे के व्यवहारों की शक्ल में हो सकते हैं।

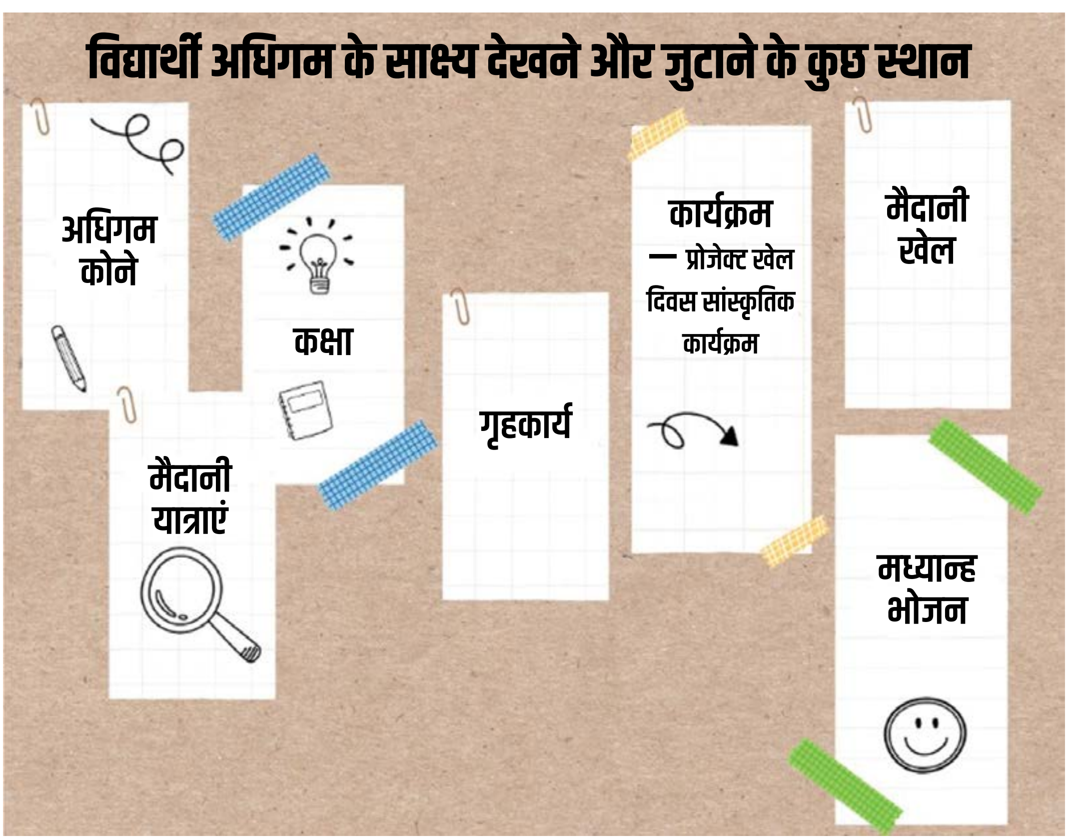
इस तरह के साक्ष्य को हासिल करने की जगहें औपचारिक और अनौपचारिक, संगठित और असंगठित, दोनों तरह की हो सकती हैं। ये कक्षा के अन्दर की भी हो सकती हैं और कक्षा के बाहर की भी; ये स्कूली प्रक्रियाओं, जैसे कि स्पोर्ट और गेम पीरियड/ असेम्बली/ मिड-डे मील्स/ लंच/ स्नैक ब्रेक्स आदि की भी हो सकती हैं।

विद्यार्थी-अधिगम की प्रक्रिया के बारे में साक्ष्य एकत्र करने में अवलोकन बड़ी भूमिका निभाता है। व्यक्ति को इस बात को लेकर सचेत होना चाहिए कि अवलोकन किस तरह किया जाए और इस अवलोकन का अध्यापन में किस तरह उपयोग किया जाए। उदाहरण के लिए, भूगोल की कक्षा में विद्यार्थियों का अवलोकन करते हुए शिक्षक उन्हें नक़्शे पर नगरों और

शहरों की स्थिति की शिनाख़्त करने और उन्हें चिह्नित करने के लिए वर्कशीट प्रदान कर सकते हैं। इस क़िस्म की वर्कशीट को हल करने के लिए विद्यार्थी विभिन्न तरीक़े अपना सकते हैं। मसलन, कुछ विद्यार्थी स्थानों को सटीक जगह पर दर्शाने के लिए अक्षांश-देशान्त देख सकते हैं; कुछ विद्यार्थी अन्दाज़े के लिए पास के स्थलों का उपयोग कर सकते हैं; कुछ स्थलों



चित्र–1 : *सुदृढ़ीकरण के लिए शिक्षक को विद्यार्थियों के सीखने के विभिन्न तरह के साक्ष्यों को अवश्य देखना चाहिए।*



चित्र–2 : *विद्यार्थी अधिगम के साक्ष्य देखने और जुटाने के कुछ स्थान।*

को दर्शाने के लिए अन्य तरह के अनुमानों का उपयोग कर सकते हैं।

विद्यार्थियों का अवलोकन करते हुए, शिक्षक को इस बात के प्रति जागरूक रहना ज़रूरी है कि विद्यार्थी सम्भावित रूप से कौन-सी युक्तियाँ अपना सकते हैं, साथ ही उन्हें इन ब्यौरों को मन में दर्ज करते रहना भी ज़रूरी है। शिक्षक गतिविधि के बीच थोड़ा रुककर विद्यार्थियों से पूछ सकते हैं कि क्या उनकी कोई शंकाएँ हैं – विद्यार्थियों द्वारा पूछे गए सवालों की प्रकृति शिक्षकों को यह समझने में मदद करेगी कि नक़्शे पर काम करते हुए विद्यार्थियों को किस तरह की कठिनाइयाँ या उलझनें पेश आ रही होंगी और इस तरह यह स्वयं गतिविधि के दौरान सीखने की प्रक्रिया को सुदृढ़ करने में शिक्षकों की मदद करेगी।

विश्वसनीय आकलन के लक्षण

आकलन रचनात्मक होना चाहिए

विद्यार्थी कक्षा में जब लिखित कार्य कर रहे होते हैं, तो वे अक्सर अवधारणाओं को सीखने की प्रक्रिया का, अपनी क्षमताओं का और कभी-कभी अपनी रुचियों तक का परिचय देते चलते हैं। आकलन की रचनात्मकता इस बात में है कि वह विद्यार्थी के सीखने की प्रक्रिया को सहारा देने में शिक्षक की मदद करे।

इस बात को बेहतर ढंग से समझने के लिए हम एक उदाहरण लेते हैं।

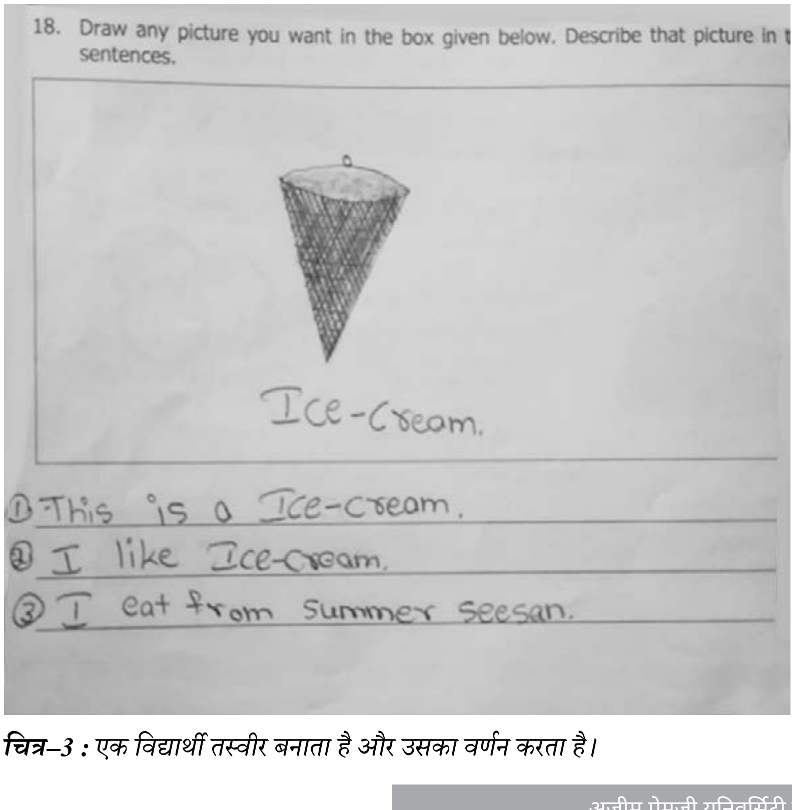
चित्र-3 में एक विद्यार्थी तस्वीर बनाता है और उसका वर्णन करता है। यहाँ इस कार्य में विद्यार्थी से कोई भी चित्र बनाने और फिर वाक्यों में उसका वर्णन करने को कहा गया था। जो एक सबसे पहली चीज़ करने की है, वह है निर्धारित परिणामों और लक्ष्यों के बरक्स विद्यार्थी के काम का विश्लेषण। इस कार्य का विश्लेषण नीचे अंकित परिणामों के बरक्स किया गया:

LO1 : सरल, संक्षिप्त वाक्य बनाता और लिखता है।

LO2 : लिंग से सम्बन्धित सर्वनामों, जैसे कि his/ her/, he/ she, it (हिज़/ हर/, ही/ शी, इट) या this/ that, here/ there, these/ those (यह/ वह, यहाँ/ वहाँ, ये/ वे) इत्यादि का प्रयोग करता है।

यह साक्ष्य हमें विद्यार्थी के बारे में क्या बताता है? इस उदाहरण से यह बात ज़ाहिर है कि बच्चा सुसंगत, सार्थक और भावोत्पादक वाक्य लिखने में सक्षम रहा है, हालाँकि उनमें कुछ ग़लतियाँ हैं। वाक्यों में शब्दों के बीच सही अन्तराल हैं, वाक्यों की शुरुआत कैपिटल लेटर के साथ होती है और उनका अन्त फ़ुलस्टॉप के साथ होता है। बच्चे ने वाक्य में *I* और *this* का सटीक ढंग से प्रयोग किया है लेकिन तीसरे वाक्य में *from* शब्द का ग़लत तरीक़े से इस्तेमाल किया है। बच्चे ने *season* की मनगढ़न्त हिज्जे का इस्तेमाल किया है और वह *a* और *an* में फ़र्क नहीं कर पाता। ऐसे और भी कई निष्कर्ष हैं जो इस साक्ष्य से निकाले जा सकते हैं।

दूसरा तर्कसंगत चरण होगा, इस साक्ष्य के आधार पर बच्चे



***चित्र–3 :** एक विद्यार्थी तस्वीर बनाता है और उसका वर्णन करता है।*

के साथ काम करना। शिक्षक कुछ सरल-से अगले चरणों की रूपरेखा तैयार कर सकता है, जैसे कि :

- यह जाँचने के लिए बच्चे की नोटबुक देखना कि विद्यार्थी में व्यक्तिवाचक और जातिवाचक संज्ञाओं की सतत समझ है या नहीं और क्या विद्यार्थी व्यक्तिवाचक और जातिवाचक संज्ञाओं के कैपिटिलाइज़ेशन के नियमों को समझता है।
- विद्यार्थी को मौखिक रूप में अपने विचारों को व्यक्त करने को प्रोत्साहित करने के लिए चित्र कहानियों या चित्र किताबों (पिक्चर बुक) का उपयोग करना। इसके बाद शिक्षक विद्यार्थी को प्रेरित कर सकते हैं कि वह उन विचारों को अपनी नोटबुक में लिखे और इस काम में वे विद्यार्थी के लिए ज़रूरी सहायता दे सकते हैं।
- वे ऐसे विशिष्ट उदाहरणों की चर्चा कर सकते हैं जिनमें *a, an* और *the* का प्रयोग किया हो, ताकि विद्यार्थी इनके सही इस्तेमाल के नियमों को समझ सकें।
- विद्यार्थी को उसके काम के बारे में अपनी प्रतिक्रिया से अवगत कराते हुए उसे बता सकते हैं कि उसने क्या अच्छी तरह से किया है और किन जगहों पर सुधार लाने की ज़रूरत है।

ऊपर के दो चरणों को *विश्लेषण और व्याख्या* व *साक्ष्य पर काम करना* की संज्ञा दी गई है। यह समझ सकते हैं कि मुमकिन है कि शिक्षक प्रत्येक विद्यार्थी द्वारा की गई हर एक गतिविधि के लिए यह सब न कर पाएँ। लेकिन, अगर शिक्षक समय-समय पर ऐसा विश्लेषण कर सके तो वह अलग-अलग विद्यार्थी की क्षमताओं का बहुत अच्छा बोध हासिल कर सकता है और तब शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में उन्हें बेहतर तरीक़े से सहारा दे सकता है, जिसके नतीजे में व्याकरण का 'सही' इस्तेमाल सुदृढ़ हो सकता है।

विश्लेषण और व्याख्या व साक्ष्य पर काम करने के लिए एक सरल-सी सूची यह हो सकती है :

- यह साक्ष्य मुझसे सीखने की सीमा के बारे में क्या कहता है?
- विद्यार्थी क्या जानता है? क्या कोई ग़लतफ़हमियाँ हैं?
- क्या अनेक साक्ष्य एक ही तरह के निष्कर्ष की ओर संकेत कर रहे हैं?
- सुदृढ़ीकरण के अगले क़दम क्या-क्या होंगे?

आकलन विकासपरक होना चाहिए

जहाँ शिक्षक विद्यार्थी की अधिगम की प्रक्रिया को सहारा देने की भरसक अच्छी कोशिश कर सकता है, हमें यह भी मालूम होना चाहिए कि ज़रूरी नहीं है कि 'सभी को एक तराजू में तौलने वाला' का दृष्टिकोण कारगर ही हो। कुछ ऐसे विद्यार्थी होंगे जो सीखने के विभिन्न स्तरों पर होंगे। कुछ ऐसे होंगे जो कुछ भी लिख पाने में अक्षम हों और थोड़े-से ऐसे होंगे जो अधूरे वाक्य लिखते होंगे। और कुछ ऐसे भी हो सकते हैं जो अधिक परिष्कृत शब्दावली का उपयोग करते हुए ज़्यादा जटिल वाक्य लिखते होंगे। ऐसे में शिक्षक के लिए यह समझना महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि एक ही योग्यता के लिए विद्यार्थी अलग-अलग स्तरों पर अपनी क्षमताओं का प्रदर्शन कर सकते हैं। ऐसी स्थितियों में, आकलन में फ़र्क़ होना चाहिए ताकि विद्यार्थियों को उनकी कुशलता के स्तरों पर अपनी क़ाबिलियतों को दर्शाने में मदद मिल सके।

हालाँकि यह चीज़ शिक्षक के लिए वास्तव में चुनौतीपूर्ण लग सकती है, लेकिन भाषा का कोई भी शिक्षक जिन दो सर्वाधिक बुनियादी योग्यताओं को अपने विद्यार्थियों में विकसित होते देखना चाहता है, वे हैं आयु और स्तर के अनुरूप पढ़ना और लिखना। अगर शिक्षक ऐसी अनेक वर्कशीट्स और ज़िम्मेदारियों को डिज़ाइन या क्यूरेट करने में सक्षम होता है जो उसकी कक्षा के विभिन्न विद्यार्थियों की ज़रूरतें पूरी करती हों, तो वह इस तरह के अलग-अलग आकलनों के लिए अच्छी तरह तैयार होता है, क्योंकि तब वह विद्यार्थियों के सीखने के स्तरों के अधिक विश्वसनीय साक्ष्य एकत्र कर सकेगा और सुदृढ़ीकरण को अधिक प्रभावशाली ढंग से उपलब्ध करा सकेगा। यह शिक्षक को अपनी कक्षा में, किसी भी बच्चे को सीखने की प्रक्रिया में पीछे छोड़े बग़ैर, सीखने की विविधता पर विचार करने में भी मददगार साबित होता है। आकलनों का यह नज़रिया उन्हें अधिक निष्पक्ष भी बनाता है और वे विद्यार्थियों की अधिक पहुँच में होते हैं। जैसे ही शिक्षक में यह आत्मविश्वास पैदा हो जाता है कि कक्षा के सारे विद्यार्थी स्वतंत्र ढंग से कम-से-कम कुछ वाक्य लिखने में सक्षम हैं, शिक्षक सारी कक्षा के लिए लेखन कार्य की जटिलता में वृद्धि कर सकता है।

आकलन सीखने पर केन्द्रित होना चाहिए

हालाँकि उपरोक्त सारे तरीक़े आकलन को अधिगम-केन्द्रित बनाते हैं, पिछले दसेक वर्षों में *अधिगम* के रूप में *आकलन* ने लोकप्रियता हासिल की है। इस तरीक़े के अन्तर्गत, मूलभूत मुद्दा यह है कि विद्यार्थी अपने पिछले प्रदर्शन या उपलब्धि के सन्दर्भ में ख़ुद ही अपना आकलन करते हैं। दूसरे विद्यार्थियों के साथ कोई तुलना नहीं होती – हर कोई अपना मापदण्ड निर्धारित करता है और उसके मुताबिक़ अपनी प्रगति को ट्रैक करता है। यह चीज़ विद्यार्थियों को अधिक आत्मनिर्भर बनाती है, क्योंकि वे ख़ुद ही अपनी सामर्थ्यों और कमज़ोरियों का आकलन करते हैं और उन पर विचार करते हैं। यहाँ आकलन सीखने का पर्याय बन जाता है और आत्मचिन्तन व

आत्मविकास में फलित होता है।

अधिगम के रूप में *आकलन* शिक्षकों के लिए भी उतना ही महत्त्वपूर्ण और प्रासंगिक है। इससे उन्हें इस बात का आकलन करने में मदद मिलती है कि उनकी युक्तियाँ किस हद तक विद्यार्थियों के अध्ययन में असर डाल सकी हैं। विद्यार्थी-अधिगम और अध्यापन की यह सतत पहचान शिक्षकों को यह समझने में मदद करती है कि सुदृढ़ीकरण की ज़रूरत कहाँ और किस हद तक है।

निष्कर्ष

उपरोक्त सारे व्यवहारों में शिक्षकों के लिए सीखने के मानकों की व्यापक समझ होना महत्त्वपूर्ण है। विद्यार्थियों के सीखने के कौशल को सुदृढ़ बनाने के लिए किए गए किसी भी आकलन को पाठ्यक्रम सम्बन्धी लक्ष्यों, योग्यताओं और सीखने के परिणामों में आधारित होना चाहिए। यह महत्त्वपूर्ण है कि पाठ्यपुस्तकों की विषयवस्तु का उपयोग ज्ञान, क्षमताओं, मूल्यों और अभिरुचियों को विकसित करने के लिए किया गया हो। विषयवस्तु को विद्यार्थी के स्तर और परिप्रेक्ष्य के अनुरूप रखा जाना भी महत्त्वपूर्ण है। शिक्षक के लिए ज़रूरी है कि वह ऐसे दृष्टान्तों और क़िस्सों की मार्फ़त अवधारणाओं को विकसित और प्रस्तुत करे जिनसे उसकी कक्षा के विद्यार्थी आसानी से जुड़ सकते हों। अक्सर ऐसा हो सकता है कि शिक्षक वर्ष की शुरुआत में इस चीज़ के प्रति पूरी तरह जागरूक न हो, लेकिन नियमित वार्तालाप और चर्चाएँ विद्यार्थियों को बेहतर ढंग से समझने में और विषयवस्तु को उनकी योग्यताओं और रुचियों के स्तर पर लाने में शिक्षकों की मदद करती हैं।

विद्यार्थी-अधिगम की प्रक्रिया का सुदृढ़ीकरण केवल उस युक्ति पर निर्भर नहीं करता जो शिक्षक अपनाता है बल्कि वह समय के साथ विकसित हुए कक्षा के वातावरण पर भी निर्भर करता है। कक्षा की संस्कृति जो विद्यार्थियों को उनकी शंकाओं का समाधान करने, सवाल पूछने, आत्मविश्वास अर्जित करने और तनाव-मुक्त व ग़ैर-नुक्ताचीन माहौल में अपने विचारों को साझा करने में सक्षम बनाती है, वह आकलन के तनाव को ख़त्म करने और आजीवन सीखते रहने की इच्छा का पोषण करने में बहुत मदद करती है।

आभार

लेखिका इस लेख के लेखन में योगदान के लिए प्रणाली शर्मा और पूजा आर्य के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हैं।



आँचल चोमल अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी में शिक्षक हैं। उन्होंने बड़े पैमाने के आकलनों, सीसीई, सामाजिक-भावनात्मक आकलनों, बोर्ड की परीक्षाओं में सुधार और टीईटी सुधारों के लिए रूपरेखाओं, साधनों (टूल) और प्रक्रियाओं को डिज़ाइन किया है। उन्होंने पाठ्यक्रम और शिक्षण-प्रक्रिया में विभिन्न क़िस्म के सुधारों व शिक्षण-अध्ययन सामग्री तैयार करने के लिए अनेक राज्य सरकारों के साथ काम किया है। वे पूरे भारत में शिक्षकों, शिक्षकों के प्रशिक्षकों, वरिष्ठ अधिकारियों और ग़ैर-सरकारी संस्थाओं के कार्यकर्ताओं के लिए निरन्तर शिक्षण कार्यक्रमों को डिज़ाइन करती हैं और उन्हें करवाती हैं। उनसे *aanchal@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : मदन सोनी **पुनरीक्षण :** प्रतिका गुप्ता **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय